1

Lecture Series, No. 65.

Online Class, Date - 19/12/2022, Day - ..., Time - ...

TOPIC,

(1) Categories.

Dr. Surita Kumari
Depart of philosophy.
B.A Part-I
Paper - (S.)
A.N.D. College Shahpur.
Patory, Samastipur.

Ans:- द्रव्य को वैशेषिक दर्शन का प्रथम पदार्थ कहा जाता है। इसकी परिभाषा देते हुए कहा गया है :- क्रिया गुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्य लक्षणम्। द्रव्य के बिना गुण और कर्म की कल्पना भी असंभव है। गुण और कर्म, द्रव्य में ही मिले होते हैं। उनके स्वतंत्र अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। जिस सत्ता में गुण और कर्म साथ-साथ मिले रहते हैं। उनके आधार को ही द्रव्य कहा जाता है।

यद्यपि गुण और कर्म द्रव्य के साथ-साथ मिले होते हैं।

P.T.O

फिर भी गुण और कर्म द्रव्य से भिन्न माने जाते गुण और कर्म गुणों से परे हैं उन्हें गुणवान की श्रेणी में रखा जा सकता है। द्रव्य इसके विपरीत गुणों से युक्त है। द्रव्य को गुणवान कहना प्रमाण ~~[illegible]~~ ह संगत है।

अत! द्रव्य को गुण या कर्म से भिन्न होते हुए भी उनका आधार माना जाता है।

द्रव्य की परिभाषा से ही स्पष्ट हो जाता है कि द्रव्य गुण और कर्म का आधार होने के अतिरिक्त अपने कार्यों का उपादान कारण (Material cause) है। उदाहरणस्वरूप सूत से कपड़े का निर्माण होता है इसलिए सूत

P.T.O.

को कपड़े का उपादान कारण कहा जाता है। ठीक इसी प्रकार द्रव्य भी अपने कार्यों का उपादान कारण है।

द्रव्य नौ प्रकार के होते हैं। :→ (i) काल (ii) अग्नि (iii) वायु (iv) जल (v) ~~आक~~ आकाश (vi) दिक् (vii) काल (viii) आत्मा (ix) मन।

इन द्रव्यों में से प्रथम पाँच यानी (जल,) पृथ्वी, जल, अग्नि और आकाश को पंचभूत (Five Physical eliments) कहा जाता है।

प्रत्येक का अपना अलग-अलग एक विशिष्ट गुण होता है।

पृथ्वी का विशेष गुण 'गंध' है। जल का विशेष गुण 'रस' है। वायु का विशेष गुण 'स्पर्श' है। अग्नि का विशेष गुण 'रूप' है तथा आकाश का 'विशेष' गुण 'शब्द' है। END